बिजली का सपना

देश में बिजली का उत्पादन बढ़ाने के लिए कैबिनेट ने भारी पानी से चलने वाले वाले दस न्यूक्लियर रिऐक्टर बनाने का फैसला लिया है। हर रिऐक्टर की क्षमता सात सौ मेावाट होगी और इससे कुल मिलाकर सात हजार मेगावाट बिजली का उत्पादन होगा। जापान सरकार के सहयोग से बनने और चलने वाले ये रिऐक्टर सन 2024 तक बनकर तैयार होंगे। इस तरह देश में परमाणु बिजलीघरों की संख्या 32 हो जाएगी। फिलवक्त देश में 22 न्यूक्लियर रिऐक्टर हैं जो 6780 मेगावाट बिजली बनाते हैं। यह देश के कुल बिजली उत्पादन का 3.5 फीसद और खपत का 1.3 फीसद है। जापानी कंपनियों के साथ-साथ हल्के पानी से चलने वाले नई टेक्नॉलजी के रिऐक्टर बनाने वाली पश्चिमी देशों की कंपनियों को भी आकर्षित करने के लिए सरकार लायबिलिटी कानून में परिवर्तन करने की बात सोच रही है। अमेरिकी कंपनियों के साथ परमाणु बिजली बनाने का समझौता मुख्यतः दुर्घटना से जुड़ी देनदारियां बढ़ने की वजह से ही जमीनी शक्ल नहीं ले पाया। सरकार का यह फैसला साहसिक कहा जाएगा, क्योंकि अभी तो लगभग सारे ही पश्चिमी देश न्यूक्लियर पावर से पीछा छुड़ाने में जुटे हैं। फ्रांस के नए पर्यावरण मंत्री निकोलस हलोट ने 2025 तक आधे ऐटमी प्लांट बंद करने की बात कही है। इसकी मुख्य वजह यह है कि जापान के फुकुशीमा संयंत्र में हुई दुर्घटना के बाद से परमाणु बिजली को लेकर लोगों की आशंकाएं बहुत बढ़ गई हैं। परमाणु बिजली को शत प्रतिशत आशंकामुक्त बनाने का कोई तरीका नहीं है। दुर्घटनाओं से निपटने के सबसे सुरक्षित उपाय कर लिए जाएं तो भी इनसे निकलने वाले कचरे को डंप करना खुद में एक बहुत बड़ी समस्या है। अभी यह देखना दिलचस्प है कि एक तरफ अमेरिका और यूरोपीय देश परमाणु बिजली से किनारा कर रहे हैं, दूसरी तरफ एशिया के दो सबसे बड़े देश चीन और भारत इसे जोर-शोर से आगे बढ़ाने में जुटे हैं। चीन सन 2020 तक अपने एटमी प्लांट्स से 30 हजार मेगावाट से भी ज्यादा बिजली उत्पादन की योजना लेकर चल रहा है। भारत की हालिया घोषणा उत्साहवर्धक है, लेकिन इसका एक कमजोर पहलू यह है कि ईंधन और भारी पानी, दोनों बाहर से मंगाने की मजबूरी के चलते यह बिजली हमें काफी महंगी पड़ेगी।

शारीरिक भाषा से जीत की लय

हर व्यक्ति की खाने और पहनने के संदर्भ में पसंद अलग-अलग होती है। किसी को करेले की सब्जी बहुत अच्छी लगती है तो किसी को उसे देखते ही घृणा होने लगती है। कुछ लोगों का मूंगफली और चने खाते ही पेट दर्द होने लगता है तो वहीं कुछ लोगों को चने और मूंगफली खाकर अपने अंदर असीम ऊर्जा की अनुभूति होती है। कुछ समय बाद प्रत्येक व्यक्ति का शरीर उनकी दैनिक क्रियाओं और खानपान के अनुसार उनका अभ्यस्त हो जाता है। ठीक ऐसा ही व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं के साथ भी होता है। विद्यार्थी जीवन में एक विद्यार्थी को हिन्दी का विषय बहुत अच्छा लगता है तो दूसरे को हिन्दी पढ़ते ही नींद आने लगती है। इसी तरह धीरे-धीरे सकारात्मक एवं नकारात्मक विचार व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक अंग बनते चले जाते हैं। यदि बचपन से ही बच्चे के अंदर यह भावना बलवती की जाए कि चाहे कुछ भी हो जाए, असंभव जैसा कुछ नहीं होता और कोई विषय मुश्किल नहीं होता तो असंभव से 'अ' मिट जाता है और सब संभव बन जाता है। पैगानीनी एक बहुत ही प्रतिभाशाली वायलिन वादक थे। वे स्वयं से ही यह दोहराते थे कि कुछ भी असंभव या मुश्किल नहीं है। इसलिए उनके व्यक्तित्व की शारीरिक एवं मानसिक प्रक्रियाएं हर बाधा से टकराने के लिए एक मजबूत चट्टान बन जाती थीं। एक बार उन्हें एक संगीत समारोह में आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने मन में ठान लिया कि चाहे कुछ भी हो जाए, वे अपने प्रदर्शन से सबको चकित कर देंगे। ठसाठस भरे हाल में उन्होंने एकाग्रचित्त होकर आंखें बंद कर वायलिन के तारों को बजाना शुरू किया। दर्शक मधुर स्वर की लहरियों में खो गए। अचानक पैगानीनी को महसूस हुआ कि वायलिन के स्वर में अंतर आ गया है। उन्होंने देखा तो पाया कि वायलिन का एक तार टूट गया है। यह देखकर उन्होंने समूची भीड़ पर नज़र डाली और टूटे तार के साथ ही वायलिन बजाने लगे। कुछ समय बाद दूसरा तार भी टूट गया। पैगानीनी ने संगीत बजाना बंद कर दिया। वे दर्शकों से बोले, 'एक तार और पैगानीनी।' इसके बाद उन्होंने वाद्ययंत्र को अपनी ठोड़ी के नीचे रखा और उससे इतना भव्य संगीत निकाला कि दर्शक दांतों तले अंगुली दबाते रह गए। सभी कुर्सियों से खड़े होकर उनके भव्य और मधुर संगीत के साथ करतल ध्वनि करते रहे। संगीत खत्म होने के बाद पैगानीनी बोले, 'सफलता का एकमात्र सूत्र है आत्मविश्वास के साथ सच्चे मन से अपने कार्य को करना। आप लोग देख ही चुके हैं कि वायलिन के दो तार टूटने पर भी आपने संगीत का आनंद लिया है। यह सिर्फ कार्य के प्रति सच्ची भावना और इस बात के कारण संभव हो पाया है कि कुछ भी असंभव नहीं होता।'जब भी व्यक्ति कोई महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए कदम बढ़ाता है तो उसे कुछ शारीरिक प्रतिक्रियाओं की अनुभूति होती है। इन्हीं अनुभूतियों को व्यक्ति अपने अनुसार सकारात्मक एवं नकारात्मक बनाता है। मसलन एक व्यक्ति को मंच पर बोलने जाना है। अपना नाम पुकारे जाने पर यदि उसके पैर कांपने लगते हैं, पसीने आने लगते हैं और भीड़ को देखते ही यह एहसास होने लगता है कि सभी उसके बोलने का मजाक उड़ाएंगे तो शारीरिक प्रतिक्रियाएं नकारात्मक अनुभव कराती हैं। यदि इस स्थिति में वक्ता भीड़ को देखकर यह अनुभव करे कि उसे जीवन में एक महत्वपूर्ण पहचान बनाने का अवसर मिल रहा है तो उसके अंदर जोश एवं आत्मविश्वास का संचार होने लगता है। ऐसे में वह अपने मूल प्रदर्शन से कई गुना बेहतर प्रदर्शन करता है और कामयाबी प्राप्त करता है। संज्ञावादी मनोवैज्ञानिक सिंगर शेश्टर का कहना है कि किसी दशा में आप उसी प्रकार के मनोभावों को महसूस करते हैं, जैसा आप स्थिति के अनुसार अपनी शारीरिक प्रतिक्रियाओं को नाम देते हैं। वास्तव में बहुत से भावों के शारीरिक चिन्ह एक से होते हैं लेकिन यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है कि वह उन शारीरिक चिन्हों पर किस तरह से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। याद रखिए जिस तरह सकारात्मक शारीरिक प्रक्रियाओं की अनुकूलता व्यक्ति की मित्र होती है, उसी तरह प्रतिकूलता शत्रुता भाव से व्यक्ति की साख, स्वास्थ्य और मस्तिष्क को प्रभावित करती है। इस दुनिया में कोई भी कार्य ऐसा नहीं है जिसे अंजाम तक न पहुंचाया जा सके। आज यदि मनुष्य ने चन्द्रमा पर कदम रखने के साथ ही मंगल ग्रह पर जीवन बसाने के स्वप्न संजोने शुरू कर दिए हैं तो इसलिए क्योंकि विश्व के अनेक बुद्धिजीवियों ने अपनी शारीरिक प्रतिक्रियाओं के साथ ही अपने अवचेतन मन को हर दृष्टि में सकारात्मक और केवल सकारात्मक बना लिया है। यकीन मानिए जब व्यक्ति तन-मन से सकारात्मक बन जाता है तो जादू उसके हाथ की कठपुतली बन जाता है।

रोजगार का सवाल

नौकरियों में कमी के आंकड़े मोदी सरकार की तीन साल की उपलब्धियों पर भारी पड़ रहे हैं। लेबर ब्यूरो की ओर से हाल ही में जारी हुई सर्वे रिपोर्ट बता रही है कि 2015 में कुल 1.55 लाख नई नौकरियां मिलीं और 2016 में 2.31 लाख। लोकसभा चुनाव के दौरान हर साल दो करोड़ रोजगार वाले बीजेपी के वादे के सामने ये संख्याएं ऊंट के मुंह में जीरा ही लगती हैं। ऐसे में सरकार इसे गंभीरता से ले रही है तो यह स्वाभाविक है। कुछ समय पहले लाए गए अप्रेंटिस कानून को प्रभावी तौर पर लागू करने पर जोर दिया जा रहा है। इससे बड़ी संख्या में नौकरियां निकल सकती हैं। प्रधानमंत्री के मुताबिक समस्या आंकड़े इकट्ठा करने और उसे पेश करने के तरीके में भी है। खबर है कि सरकार देश में जॉब्स की वास्तविक स्थिति का खाका पेश करने के लिए एक नया और बड़ा सिस्टम तैयार करना चाहती है। मौजूदा सिस्टम से जमीनी हकीकत सटीक ढंग से सामने नहीं आ रही है तो उसमें बदलाव किया ही जाना चाहिए। लेकिन रोजगार संबंधी आंकड़ों को लेकर सरकार के अंदर ही गंभीर असहमतियां दिखती रही हैं। नीति आयोग से जुड़े कुछ लोगों की यह सुचिंतित राय है कि नौकरी या बंधा हुआ रोजगार कितने लोगों के पास है, यह खुद में कोई बड़ा मुद्दा नहीं है। उनके मुताबिक, ज्यादा अहम सवाल यह है कि लोगों के पास पैसा पहुंच रहा है या नहीं। अगर लोगों के पास पैसा पहुंच रहा है और उस पैसे को वे अपनी जरूरतों पर खर्च करने की स्थिति में हैं तो फिर इससे क्या फर्क पड़ता है कि संबंधित व्यक्ति किसी कंपनी में नियमित हाजिरी बनाकर महीने में एक बार वेतन पाता है, या मूंगफली के ठेले से रोज 500 रुपये कमाकर घर लाता है? इस प्रस्थापना के पीछे यह समझ काम कर रही है कि अगर पारंपरिक अर्थों में नौकरियां नहीं बढ़ रहीं या मौके-ब-मौके कम भी हो जा रही हैं तो गैर पारंपरिक रोजगार के बहुत सारे नए मौके भी सामने आ रहे हैं। भले ही यह बात सरकारी आंकड़ों में दर्ज न हो पाए, पर किसी वजह से नौकरी गंवाने वाला व्यक्ति भी ऐसे किसी न किसी मौके का फायदा उठाकर कमाई करना शुरू कर देता है, जिससे उसकी जीविका का संकट हल हो जाता है। यह एक सुविचारित राय है और इसके औचित्य को चुनौती नहीं दी जा सकती। फिर भी यह सावधानी जरूर बरती जानी चाहिए कि लोगों की जीविका को लेकर अनिश्चितता की कोई गुंजाइश न छोड़ी जाए। जिस तरह संगठित-असंगठित रोजगार के आंकड़े जुटाए जाते हैं, उसी तरह यह भी पता लगाया जाए कि लोगों को जीविका का कोई वैकल्पिक जरिया मिल पा रहा है या नहीं। मामले को अटकलों पर छोड़ना ठीक नहीं। सरकार के पास जीविका के सभी स्रोतों से जुड़े ऐक्शनेबल आंकड़े होने चाहिए, ताकि जरूरतमंद लोगों तक समय से मदद पहुंचाई जा सके।

दरकना आधार का

आधार का ता हमेशा मजबूत ही होना चाहिए जी। पर यह जो हमारा आधार है, जो हमारी पहचान है, वह इतना वीक है कि लीक हो जाता है। बात सिर्फ धोनी की नहीं है। उनके आधार का ब्योरा लीक हुआ और उनकी पत्नी ने शिकायत की तो हाहाकार मच गया। पर इधर सुना है लाखों आधार के ब्योरे लीक हो गए। अभी तक पानी के पाइप लीक होने की बात ही सुनते थे। परीक्षाओं के पर्चे भी लीक होते हैं। बाहुबली जैसी फिल्म के ट्रेलर भी सुना है लीक हो जाते हैं। पर यहां तो जिसे मजबूत होना चाहिए वही लीक हो रहा है। हालत यह है साहब कि उधर मुंबई में तो लीक होने वाले नलों को ठीक करने के लिए एक अस्सी साल का बुजुर्ग व्यंग्यकार आबिद सुरती हर घर का दरवाजा खटखटाकर पूछता है-आपका नल लीक ता नहीं कर रहा, अ÷र कर रहा है तो मैं ठीक किए देता हूं। और यहां सरकार है कि लाखों आधार लीक होने पर भी चिंता नहीं सताती। वह आधार को नागरिक के हर काम का आधार तो बनाना चाहती है और सुप्रीम कोर्ट के बार-बार मना करने के बावजूद बनाना चाहती है पर उसकी सुरक्षा की चिंता नहीं करती। अब देखिए सरकार कह रही है चाहे आपको राशन लेना हो या गैस, आधार जरूरी है। सुप्रीम कोर्ट कहता है कि नहीं, इतना भी जरूरी नहीं है साहब। सरकार कहती है-आपको चाहे स्कॉलरशिप लेनी हो या एडमिशन, आधार जरूरी है। सुप्रीम कोर्ट मना कर-कर के इतना थक गया कि अब तो जैसे उसने मान ही लिया है कि सरकार जो करेगी, वह तो करेगी ही, मेरी कौन सुन रहा है। हाथयार ता बड़-बड़ धुरंधरों ने डाल दिए साहब जो यह कहते थे कि यह मेरी निजता पर हमला है। पर अगर यह सरकार को इतना ही प्रिय है तो इसे वीक क्यों रखा हुआ है, थोड़ी मजबूती दो न। आधार को तो वैसे भी मजबूत होना चाहिए। पर हो यह रहा है कि पहले बैंकों के लाखों क्रेडिट और डेबिट कार्डों की डिटेल्स लीक हुई और अब आधार की लाखों डिटेल्स लीक हो गयी। न उस लीक का कुछ हुआ और न ही इस लीक का कुछ हो रहा है। एक पाइप लाइन लीक होने का, एक पर्चा लीक होने का तो कुछ होता नहीं, लाखों डिटेल्स लीक होने का क्या होगा। जरूरत इस बात की है कि यह न लीक हो और न वीक हो। और आधार को तो साहब वैसे भी मजबूत होना ही चाहिए।

कसौटी पर तीन साल का गुणगान

भारतीय जनता पार्टी ने 2019 के आम चुनाव को देखते हुए दो साल पहले ही अपना प्रचार शुरू कर दिया है। तीन साल पुरानी नरेंद्र मोदी सरकार को ऐतिहासिक उपलब्धियों वाली बताया जा रहा है और भक्तगण उन्हें देवता-तुल्य बताते नहीं अघाते। हाल ही में एक अंग्रेजी अखबार द्वारा आयोजित वार्ता में पूर्व संपादक और वर्तमान में विदेश राज्यमंत्री एम. जे. अकबर ने जिस तरह से पत्रकारिता वाले भाषा-कौशल का इस्तेमाल करते हुए मोदी का गुणगान किया, वह देखते ही बनता था। लेकिन यह तो महिमामंडन भरे प्रचार की शुरुआत भर है। यहां हैरान करने वाली बात यह है कि क्या केवल मोदी ही गरीब और बेसहारों के मसीहा हैं और दूसरे नेता नहीं? अनेक सरकारी स्कीमों का श्रेय देकर मोदी की छवि को उभारा जा रहा है जैसे कि मोदी स्वच्छता के पक्षधर हैं। वैसे भी हमारे समाज में कहावत रही है कि ईश्वर के बाद साफ-सफाई आराधनीय है। इसके अलावा बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसे कार्यक्रम से उन्हें महिला-समर्थक बताया जा रहा है। मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर मुहैया करवाने वाले मोदी को गरीब गृहिणियों का संरक्षक बताया जा रहा है। उन्हें वीआईपी संस्कृति के खिलाफ बताकर आम आदमी जैसा बताने का प्रयास किया जा रहा है, जिसमें सरकारी गाड़ियों से लाल-बत्ती हटाने की मुहिम देखने को मिली है। यह बात अलग है कि ज्यादातर में इनकी जगह हूटर ने ले ली है। इसी तरह 2018 तक देश के सभी गांवों में बिजली पहुंचाने का भी लक्ष्य उनकी प्रेरणा से लिया गया कहा जा रहा है। लेकिन यह बात मानने की है कि पिछली यूपीए सरकार की बनिस्पत मोदी साहसिक निर्णय लेते हैं, जिसकी एक बानगी पाकिस्तानी सीमा के अंदर घुसकर की गई सर्जिकल स्ट्राइक है। भाजपा सरकार द्वारा उपलब्धियां गिनाने के बावजूद देश को आजादी दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने और स्वतंत्रता उपरांत ज्यादातर सत्ता में रहने वाली कांग्रेस पार्टी के योगदान का कहीं जिक्र तक नहीं किया जाता है जबकि इसके विपरीत भाजपा के ही अटल बिहारी वाजपेयी थे, जिन्होंने 1971 में देश को जीत दिलवाने के लिए तत्कालीन कांग्रेसी प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की भरपूर सराहना की थी। दिखाया यह जा रहा है कि घटाटोप अंधकार से निजात दिलवाने के लिए मोदी आसमान से उतरे हैं। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में भाजपाई नेताओं और खासकर इसके मार्गदर्शक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका सवालों के घेरे में रही है। बिना किसी झिझक के मोदी ने कांग्रेस के तिलिस्मी नेता महात्मा गांधी को अपना प्रतीक बना लिया है।

व्यवहार की छाप

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर जाकिर हुसैन जब जर्मनी में पढ़ रहे थे तो वे अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप परिचितों-अपरिचितों सभी से बहुत अदब से पेश आते थे। यहां तक कि सफाईकर्मियों तक से वे बहुत सम्मान से बात करते थे। उनके एक मित्र को उनका यह व्यवहार पसंद न था। वे सफाई कर्मियों को इतना सम्मान देना गवारा नहीं करते थे। उन्होंने जब जाकिर हुसैन साहब को उनके इस व्यवहार के लिए टोका तो उनका जवाब था-मित्र, हम तो कुछ दिन यहां रहकर स्वदेश लौट जाएंगे पर हमारे व्यवहार के कारण यहां कुछ लोग भारत और भारतीयों को याद करते रहें तो यह कोई बुरा सौदा तो नहीं।

राशिफल

मेष – पूंजी निवेश में लाभ के योग रहेंगे। अत्यधिक परिश्रम व अनियमित दिनचर्या के कारण स्वास्थ्य प्रभावित होगा। धार्मिक कार्यों के प्रति रुझान बढ़ेगा।

वृष – आपको अपने मित्रों एवं सहकर्मियों के साथ उचित व्यवहार करने के लिए कुछ अधिक प्रयास करने होंगे। उदर संक्रमण, पाचन संस्थान के रोग परेशान करेंगे।

मिथुन – यात्रा के दौरान किसी अजनबी पर भरोसा न करें। इस समय जब आप अपने जीवन के संघर्ष के दौर से गुजर रहे होंगे तो अधिक परिश्रम करने से आपकी सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है।

कर्क – प्रत्यक्ष रूप में शत्रुओं से परेशानी होगी, सोच समझकर कार्य की रूपरेखा तय करें। करीबी व्यक्ति के सहयोग से मांगलिक कार्य संपन्न होंगे।

सिंह – पारिवारिक वृद्धि के संकेत मिलेंगे। राजकीय कार्यों में सफलता हाथ लगेगी, नई-नई कठिनाइयों के कारण परेशानी होगी।

कन्या – विदेश व निवेश संदर्भों में अचानक ही लाभ होगा। तमाम परेशानियों के बावजूद भी आपके मित्र आपका साथ देंगे। उदर विकार, कमर दर्द से प्रभावित रहेंगे।

तुला – आजीविका संबंधी मूलभूत समस्या का स्थायी समाधान मिलना सम्भव है। जीवनसाथी के प्रति कुछ उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक – किसी भी योजना को बनाएं परन्तु उसे गुप्त रखना अतिआवश्यक है। खर्च की अधिकता के कारण मानसिक तनाव होगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

धनु – रचनात्मक क्रिया कलापों में हिस्सा लें। कुछ नए लोगों से जान-पहचान बढ़ेगी जिससे आने वाले समय में ये लोग आपके काम आ सकते हैं।

मकर – आर्थिक स्थिति में वृद्धि और रुके कार्यों में प्रगति होगी। जीवनसाथी से बनाया हुआ तालमेल आपको वांछित संबल देगा। गण लेने की स्थितियां आएंगी।

कुंभ – नौकरी पेशा लोगों को पद प्रतिष्ठा आदि का लाभ होगा। यदि आप व्यवसायी हैं तो समय अनुकूल है, कार्य व्यवसाय को गति दे तो वांछित लाभ होगा।

मीन – निवेश व विदेश संदर्भों में अचानक ही कोई सफलता का समाचार प्राप्त होगा। आर्थिक सुविधाओं का उन्नयन होगा, सुख साधन में वृद्धि, वाह्य लोगों का भी समर्थन हासिल होगा।

शब्द सामर्थ्य

शब्द सामर्थ्य -060(Rns)

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं :
1. लज्जत, जायका 2. मुकाबला, भेंट, होड़ 5. बंदी, कैद की सजा पाने वाला व्यक्ति 7. खल-पात्र, नाटक फिल्म आदि का बुरा पात्र 9. कामी, व्याभिचारी 10. इज्जत जाना, बेइज्जती होना (उपमा)11. ऊटपटांग, विचित्र, कठिन 13. वैभव, ठाट-बाट 14. साथ, सहित 15. कामदेव की पत्नी, प्रेम 16. मैं का बहुवचन 17. दरवाजे-दरवाजे 20. एक राशि, मगर 22. नमी, सीड़, मुहर, ठप्पा 23. औषधालय, चिकित्सालय।

ऊपर से नीचे
1. आत्मनिर्भर, स्वालंबन भावना से युक्त, स्वाश्रित 2. वर्ष, बरस 3. राजी करना, रूठे हुए को खुश करना, प्रसन्न करना 4. नाटक फिल्म आदि का मुख्यपात्र 6. दीवानगी, पागलपन, 7. दो वस्तुओं के टकराने से उत्पन्न ध्वनि, बैर-विरोध, अनबन 8. खीरे की प्रजाति का एक फल 11. बेवकूफ, मूर्ख 12. बादल, मेघ 13. बहुत चालाक, होशियार 14. जिसका मत दूसरे से मिलता हो, 15. दांत, दंत 18. प्राप्ति, वस्तु आदि मिलने का प्रमाण पत्र 19. दंगा-फसाद, उपद्रव विप्लव 21. बचाव, सुरक्षा।

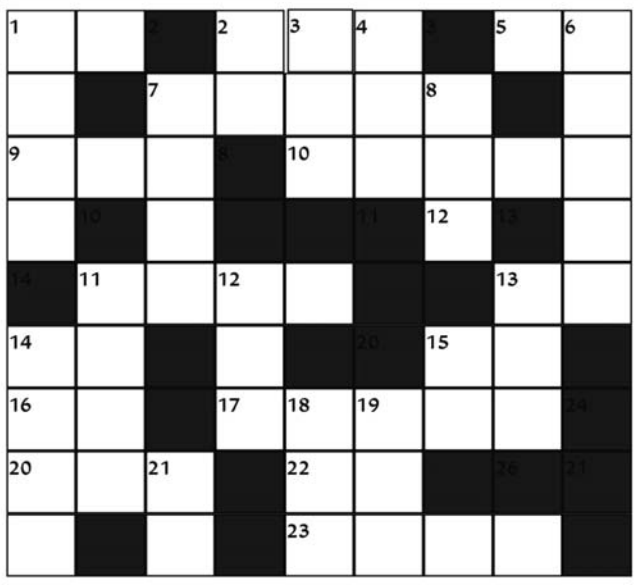

पिछले अंक का हल

ग	ल	त	ज्ञ	■	■	खा	म	खाँ
णे	■	ल	■	झ	प	की	■	■
श	र	ब	त	■	रं	■	■	मि
■	ज	गा	ना	■	प	रा	का	ष्ठा
■	नी	र	■	वि	रा	ज	मा	न
ना	च	■	■	प	■	■	य	■
म	र	णा	स	न्न	■	पा	नी	■
ची	■	■	प	■	पा	■	■	भो
न	ज	रा	ना	■	स	मा	चा	र

सू-दोकू

	2			6			1	
3			4			2		
							6	
6					4			
	9		5			6		1
4		3			9			2
	8		2				7	
1		2		4		9		6

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

पिछले अंक का हल

8	7	6	9	5	1	2	3	4
1	3	9	2	8	4	5	6	7
4	5	2	3	7	6	9	1	8
2	8	5	4	6	7	1	9	3
3	1	7	8	9	2	4	5	6
6	9	4	1	3	5	7	8	2
9	4	1	6	2	8	3	7	5
7	2	8	5	1	3	6	4	9
5	6	3	7	4	9	8	2	1

C M Y K